हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, सोमवार 27 अप्रैल 2026

11 जीवन जीने की एक संपूर्ण कला व सच्ची प्रेरणा...

12 दस किलोमीटर के एरिया में टोल फ्री को लेकर...

19वें दिन भी जारी फायर कर्मचारियों की हड़ताल, सरकार पर अनदेखी का आरोप

सरकार को अल्टीमेटम : आज से भूख हड़ताल एक और दो को ठप होगी सफाई व फायर सेवा

दमकल कर्मियों ने बवानीखेड़ा, दादरी, बाढ़ड़ा व लोहारू विस के विधायकों को सौंपे ज्ञापन

यदि सरकार दमकल कर्मचारियों की मांगों का समाधान नहीं करती, तो नपा कर्मचारी संघ भी आंदोलन में कूदेगा: पुरुषोत्तम दानव

भिवानी। विरोध प्रदर्शन के दौरान बवानीखेड़ा के विधायक कपूर वाल्मीकि और दादरी के विधायक सुनील सांगवान को ज्ञापन सौंपते हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी जिले में फायर ब्रिगेड कर्मचारियों की राज्यव्यापी हड़ताल लगातार तेज होती जा रही है और यह अब 19वें दिन में प्रवेश कर चुकी है। यह हड़ताल 8 अप्रैल से हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन के आह्वान पर शुरू हुई थी। भिवानी दमकल केंद्र पर चल रहे धरने की अध्यक्षता जिला प्रधान अजय ने की, जबकि संचालन सचिव नरेंद्र ने किया।

धरने के दौरान विभिन्न कर्मचारी संगठनों के नेताओं ने सरकार के खिलाफ जोरदार नाराजगी जताई और मांगों को जल्द पूरा करने की चेतावनी दी। धरने को संबोधित करते हुए नगर पालिका कर्मचारी संघ के प्रदेश सचिव पुरुषोत्तम दानव ने कहा कि यदि सरकार समय रहते दमकल कर्मचारियों की मांगों का समाधान नहीं करती, तो नगर पालिका कर्मचारी संघ भी आंदोलन में कूदेगा। उन्होंने घोषणा की कि 27 और 28 अप्रैल को क्रमिक भूख हड़ताल की जाएगी तथा 1 और 2 मई को नगर पालिका कर्मचारी भी काम बंद कर हड़ताल करेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि इससे उत्पन्न स्थिति की जिम्मेदारी प्रदेश सरकार की होगी।धरने में सर्व कर्मचारी संघ के जिला प्रधान सुमेर आर्य, अशोक गोयत, चांदराम, सुरेश भारद्वाज, सुमेर सिंह सहित कई कर्मचारी नेताओं ने भाग लिया। नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार कर्मचारियों की मांगों की लगातार अनदेखी कर रही है, जिससे उन्हें आंदोलन तेज करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। राज्य कमेटी के निर्णय के अनुसार विभिन्न विधायकों और मंत्रियों को ज्ञापन भी सौंपे गए हैं, जिनमें बवानीखेड़ा, दादरी, बाढ़ड़ा और लोहारू के विधायक शामिल हैं।

कर्मचारी नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो 27 अप्रैल से भूख हड़ताल शुरू कर दी जाएगी, जिससे जिले की दमकल और सफाई व्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हो सकती है। भीषण गर्मी के चलते आगजनी की घटनाएं बढ़ रही हैं, ऐसे में दमकल कर्मियों की हड़ताल से आपात सेवाओं पर गंभीर असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। अस्थायी रूप से लगाए गए अनुभवहीन कर्मचारियों के कारण जान-माल के नुकसान का खतरा भी बढ़ गया है।इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण मुद्दा फरीदाबाद में 16 फरवरी को ड्यूटी के दौरान जान गंवाने वाले दमकल कर्मियों भवीचंद शर्मा और रणवीर सिंह को शहीद का दर्जा न दिया जाना है। यूनियन का आरोप है कि सरकार ने अब तक उनके परिवारों को न तो एक-एक करोड़ रुपये का मुआवजा दिया है और न ही परिवार के किसी सदस्य को नौकरी दी है। कर्मचारियों का कहना है कि यह उनके साथ भेदभाव है, क्योंकि अन्य विभागों के कर्मचारियों को ऐसी परिस्थितियों में सम्मान और सहायता दी जाती

स्थायी सुरक्षा नीति बनाने और जोखिम भत्ता देने की मांग

यूनियन ने दमकल कर्मियों के लिए स्थायी सुरक्षा नीति बनाने, जोखिम भत्ता, वर्दी भत्ता देने, कच्चे कर्मचारियों को स्थायी करने और सभी कर्मचारियों को उच्च गुणवत्ता की सुरक्षा किट उपलब्ध कराने की मांग उठाई है। अजय श्योराण ने कहा कि यदि सरकार ने जल्द सकारात्मक कदम नहीं उठाए, तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा। इस आंदोलन को किसान, मजदूर, छात्र संगठनों और विभिन्न राजनीतिक दलों का भी समर्थन मिल रहा है।

खावा में कारिंदे के साथ मारपीट करने व नकदी छीनने का आरोप

बहल। क्षेत्र के गांव खावा में शुक्रवार रात को शराब की दुकान पर कुछ युवकों ने हमला कर दुकान मालिक से मारपीट की और एक सोने की चेन सहित करीब 17 हजार रुपये की नगदी छीन ली। पुलिस ने घायल दुकान मालिक के भाई की शिकायत पर प्राथमिकी दर्ज की है।

■ वारदात के दौरान युवकों ने दुकान में तोड़फोड़ की

पुलिस को दी शिकायत में खावा निवासी दिनेश ने बताया कि 24 अप्रैल की रात करीब 10:45 बजे उसके ताऊ का बेटा कमल सिंह उर्फ भूप दुकान पर दिन की बिक्री की नगदी लाने गया था। कमल कैश लेने के बाद दुकान में बैठा था कि इस दौरान दो गाड़ियों में सवार 10-12 युवक वहां पहुंचे। उन्होंने उसके भाई कमल पर लोहे की रॉड व डंडों से हमला कर दिया। हमले में कमल बुरी तरह से घायल हो गया। हमलावर युवकों ने कमल की जेब से दुकान का कैश 17,280 रुपये नकद और उसके गले से सोने की चेन छीनकर फरार हो गए। वारदात के दौरान युवकों ने दुकान में भी तोड़फोड़ की। आसपास के लोगों ने घायल कमल को पहले सीएचसी सिवानी और बाद में हिसार के निजी अस्पताल में पहुंचाया जहां वह उपचाराधीन है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

विवाहिता दो बच्चों सहित लापता पुलिस ने दर्ज की शिकायत

लोहारू। उपमंडल के एक गांव से एक विवाहिता अपने दो बच्चों सहित लापता होने का मामला प्रकाश में आया है। लोहारू पुलिस ने विवाहिता के पति की शिकायत पर पत्नी और दोनों बच्चों की गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में महिला के पति ने बताया कि उसकी करीब 35 वर्षीय पत्नी और आई वर्षीय बेटा और चार वर्षीय बेटी बिना बताए घर से चले गए। उनकी आस पड़ोस में काफी तलाश की गई लेकिन वे नही मिले। पुलिस ने गुमशुदगी का मामला दर्ज करके उनकी तलाश शुरू कर दी है।

भिवानी। साइकिल रैली में भाग लेते कोच, विद्यार्थी व खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

साइकिल रैली निकालकर फिट रहने का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) प्रशिक्षण केंद्र द्वारा फिट इंडिया मूवमेंट के अंतर्गत संडेज ऑन साइकिल कार्यक्रम का आयोजन किया। यह आयोजन आर्टिफिसल इंटेलिजंस फॉर ए स्मार्टर एंड हेयलथीर इंडिया थीम के साथ सफलतापूर्वक हुआ। फिट इंडिया मूवमेंट के तहत भारतीय खेल प्राधिकरण (साईं) प्रशिक्षण केंद्र ने 71वें संस्करण के उपलक्ष्य में संडेज ऑन साइकिल में साइकिल रैली निकाली और फिटनेस कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम आर्टिफिसल इंटेलिजंस फॉर ए स्मार्टर एंड हेयलथीर इंडिया थीम पर आधारित रहा, जिसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक के माध्यम से युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ कुश्ती कोच हरेंद्रसिंह एवं बीपीएस की सोनिया बजाज व रामकिशन सरोहा हरी झंडी दिखाकर किया। उन्होंने युवाओं को नियमित व्यायाम, अनुशासन एवं फिटनेस के महत्व के बारे में प्रेरित किया। कार्यक्रम में वैश्य कॉलेज के छात्र सागर, प्रीतम और मंदीप सहित अनेक युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और उत्साह के साथ साइकिल रैली में शामिल हुए। प्रतिभागियों में विशेष जोश एवं ऊर्जा देखने को मिली, जिससे कार्यक्रम का वातावरण प्रेरणादायक बना रहा। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं को फिट इंडिया मूवमेंट से जोड़ना, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक विषयों के साथ स्वास्थ्य को जोड़कर जागरूकता फैलाना रहा। अंत में प्रतिभागियों को नियमित रूप से फिट रहने, साइक्लिंग अपनाने व समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का संदेश दिया।

उठान की सुस्त रफ्तार पर भड़का भारतीय किसान संघ, दिया अल्टीमेटम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जब तक मंडी से अनाज का उठान नहीं होता, तब तक किसान के खाते में फसल का पैसा ट्रांसफर होने की प्रक्रिया लटकी रहती है

हरियाणा की अनाज मंडियों में रबी फसलों की आवक के बीच उठान की धीमी प्रक्रिया अब किसानों के लिए गले की फांस बनती जा रही है। रविवार को भारतीय किसान संघ के प्रदेश मंत्री व बिजली आयाम प्रमुख महिपाल बड़दू ने भिवानी जिले की विभिन्न मंडियों का तूफानी दौरा किया। इस दौरान उन्होंने पटौदी अनाज मंडी की बदहाली और प्रशासन की सुस्ती पर कड़ा रोष व्यक्त करते हुए सरकार को सीधे शब्दों में चेतावनी दी है।

बता दे कि रविवार को भाकिसं प्रदेश मंत्री एवं बिजली आयाम प्रमुख महिपाल बड़दू के नेतृत्व में किसान संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने मंडियों की जमीनी हकीकत जानी। इस टीम में जिला सह मंत्री कुलदीप सिंढ़ाण, ब्लॉक अध्यक्ष मांगेराम, राजेश व अन्य किसान मौजूद रहे। जब यह दल तोशाम क्षेत्र की पटौदी अनाज मंडी पहुंचा तो वहां अनाज के अंबार लगे मिले। मंडी में मौजूद कर्मचारियों से पूछताछ और मौके के मुआयने में पाया गया कि उठान की गति बेहद धीमी है। महिपाल बड़दू ने कहा कि अनाज का उठान न होने के कारण मंडियों में जगह नहीं बची है और सबसे बड़ी मार किसान की जेब पर पड़ रही है। महिपाल बड़दू ने इस संकट के तकनीकी और आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब तक मंडी से अनाज का उठान नहीं होता, तब तक किसान के खाते में उसकी फसल का पैसा ट्रांसफर होने की प्रक्रिया लटकी रहती है। उन्होंने त उच्च अधिकारियों से संपर्क साधा और उन्हें जमीनी हकीकत से रूबरू कराया। संघ ने दो टूक शब्दों में प्रशासन को 3 दिन का समय देते हुए कहा कि मंडियों में पड़े अनाज को अगले 72 घंटों के भीतर गोदामों तक पहुंचाया जाए, उठान होते ही किसानों के खातों में बिना देरी के राशि डाली जाए। साथ ही चेतावनी दी कि यदि 3 दिन के भीतर स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो भारतीय किसान संघ सडक़ों पर उतरकर उग्र आंदोलन शुरू करेगा। जिसकी पूरी जिम्मेदारी हरियाणा सरकार और स्थानीय प्रशासन की होगी।

भिवानी। अनाजमंडी का निरीक्षण करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस दौरान उनके साथ अशोक कुमार पटौदी, ओमप्रकाश्र, जयप्रकाश, अजमेर, राज सिंह , डा. धर्मबीर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सहित अन्य पदाधिकारी व किसान भी मौजूद रहे।

युवक से देशी कट्टा बरामद, भेजा जेल

चरखी दादरी। स्पेशल स्टाफ दादरी ने अवैध हथियार के साथ युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया। शनिवार रात को स्पेशल स्टाफ दादरी की टीम एएसआई मुकेश की टीम गस्त पर थी। उस दौरान सूचना मिली कि कलानौर खुर्द निवासी अमन बौंद कलां वाले लिंक रोड नजदीक 152 डी पुल के पास कहीं जाने की फिराक मे खड़ा है। पुलिस टीम ने मौके पर दबिश देकर उसे काबू कर पूछताछ की तो उसने अपना नाम अमन कलानौर बताया। तलाशी लेने पर उसके पास देशी कट्टा बरामद हुआ। पुलिस ने शस्त्र अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया। आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया।

हवन-पूजन के साथ बोरवेल का किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

हड़ोदा स्थित खेल मैदान में श्रीसनातन धर्म की परंपरा के अनुसार विधिवत हवन-पूजन के साथ बोरवेल का शुभारंभ किया। पंडित हरिकिशन ने मंत्रोच्चारण के बीच संपन्न हुए धार्मिक आयोजन में पूज्य बाबा जतिनाथ के आशीर्वाद से मुख्यतिथि एवं जिलाध्यक्ष सुनील इंजीनियर हड़ोदी ने बोरवेल का उद्घाटन किया।

मुख्यतिथि सुनील ने कहा कि बोरवेल कार्य तुरंत प्रभाव से शुरू कर दिया है, जिससे खेल मैदान में अभ्यास कर रहे खिलाड़ियों को जल्द ही बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी। उन्होंने बताया कि मैदान में प्रतिदिन सैंकड़ों खिलाड़ी अभ्यास करते हैं और हरियाणा सरकार द्वारा हैंडबॉल नर्सरी की स्थापना क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। उन्होंने विश्वास जताया कि यहां के खिलाड़ी भविष्य में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश और क्षेत्र का नाम रोशन करेंगे। साथ ही युवाओं से अनुशासन, मेहनत एवं समर्पण के साथ खेलों में आगे बढ़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर जिला खेल अधिकारी विष्णु भगवान, सरपंच जगबीर जगदे, कोच नरेश, भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष नवीन काकड़ोली, पूर्व सरपंच विजयसिंह, लीलाराम, जयप्रकाश, किसान नेता राजकुमार हड़ौदी, संजय पंच, सतीश हड़ोदा, राजकुमार हड़ोदा, मास्टर विजय, भज्जी श्योराण आदि मौजूद रहे।

परमसंत कंवर साहेब महाराज ने प्रवचनों से साध-संगत को किया निहाल

गुरु के ज्ञान के बिना मनुष्य का जीवन अंधकारमय:कंवर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

राधा स्वामी दिनोद के परमसंत कंवर साहेब महाराज इन दिनों नेपाल एवं उत्तर-पूर्व भारत की सत्संग यात्रा पर हैं। 24 अप्रैल से प्रारंभ यह यात्रा आगामी दस दिनों तक चलेगी, जिसमें धुलाबारी, दार्जिलिंग, जोरथांग, गंगटोक और सिलीगुड़ी में सत्संग एवं दर्शन होंगे।

कल दार्जिलिंग शाखा में हजूर महाराज ने फरमाया कि जिस मनुष्य के जीवन में गुरु, सत्संग और भक्ति का स्थान नहीं होता, उसका जीवन वास्तव में सूना होता है। जैसे चंद्रमा के बिना रात्रि अधूरी लगती है, सूर्य के बिना दिन और दीपक के बिना प्रकाश नहीं होता, उसी प्रकार गुरु के ज्ञान के बिना मनुष्य का जीवन अंधकारमय और सूना हो जाता है। जीवन में गुरु का होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि गुरु के बिना सच्चे ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। गुरु ज्ञान के सामने चाहे सैकड़ों चंद्रमा और हजारों सूर्य भी उदय हो जाएँ, फिर भी वह गुरु ज्ञान के सामने अंधकार ही प्रतीत होते हैं ।

गुरु हमारे जीवन के सच्चे हितैषी और कल्याणकारी होते हैं। वे न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि हमें गृहस्थ जीवन, धर्म, दान-पुण्य और सेवा के मार्ग पर भी चलना सिखाते हैं। हमें धर्म के पथ पर अग्रसर करते हैं और हमें सच्चा धार्मिक बनाते हैं। धार्मिक वही व्यक्ति है, जिसके हृदय में दया होती है और जो दूसरों की सहायता करने तथा दान देने की भावना रखता है। भक्ति में भाव का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भाव में अपार शक्ति होती है-जिसके प्रति हमारा भाव जितना बढ़ता है, उसके गुण अपने आप हमारे भीतर उतरने लगते हैं। यही कारण है कि गुरु और संतों के प्रति प्रेम-भाव रखने की प्रेरणा दी जाती है, ताकि हम भी उनके समान गुणों को अपने जीवन में धारण कर सकें। गुरु हर परिस्थिति में हमारे सहायक बने रहते हैं। वे कठिन से कठिन मार्ग को भी सरल बना देते हैं और हमें सहजता से पार लगा देते हैं।

नाम के स्मरण से संकल्प और इच्छाएं होती हैं पूर्ण

जब हम गुरु के दिए हुए नाम का स्मरण करते हुए अभ्यास और नाम-जप करते हैं, तो हमारे संकल्प और इच्छाएँ या तो पूर्ण हो जाती हैं, या फिर हमारे भीतर ऐसी शांति और संतोष उत्पन्न हो जाता है कि उनके अधूरे रहने पर भी मन विचलित नहीं होता। क्योंकि गुरु हमें जीवन का सच्चा सत्य समझा देते हैं। वे हमारे मन को संसार की नश्वर वस्तुओं से हटाकर प्रभु के चरणों में लगा देते हैं, जहाँ केवल शांति ही शांति है। संसार की वस्तुएँ हमें अपनी ओर आकर्षित करती हैं, परंतु गुरु हमें उनमें उलझने से बचाते हैं। जो व्यक्ति नियमित रूप से सत्संग करता है, जिसके घर में गुरु-वाणी का पाठ होता है और जहाँ संतों का आना-जाना बना रहता है, उसके सभी पापकर्म धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। ऐसा घर स्वयं तीर्थ के समान पवित्र और पूजनीय बन जाता है।

बुजुर्ग से अंगूठी चोरी के मामले में तीसरे आरोपी को किया गिरफ्तार

भिवानी। पुलिस अधीक्षक भिवानी सुमित कुमार के निर्देशानुसार जिला पुलिस द्वारा चोरी की घटनाओं में संलिप्त आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में कार्रवाई करते हुए सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी की टीम ने वृद्ध व्यक्ति से सोने की अंगूठी चोरी करने के मामले में तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।

इस संबंध में आजाद नगर, भिवानी निवासी एक व्यक्ति ने थाना शहर भिवानी में शिकायत दर्ज करवाई थी कि दिनांक 08 मार्च को वह सुबह सैर करके अपने घर लौट रहे थे। जब वह घंटाघर के पास पहुंचे तो मोटरसाइकिल पर सवार दो युवकों ने उन्हें बहकाकर उनके हाथ से सोने की अंगूठी चोरी कर ली। उक्त शिकायत पर थाना शहर भिवानी में संबंधित धाराओं के तहत अभियोग दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी के मुख्य सिपाही सुनील कुमार ने तीसरे आरोपी को न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान बिरेंद्र पुत्र प्रेम, निवासी करतारपुरा कॉलोनी, रोहतक के रूप में हुई है।

गांवों के नाम रागों पर आधारित

हरियाणा में राग परंपरा, जिसे लोकगीतों के रूप में भी जाना जाता है, का एक समृद्ध इतिहास है। यहां तक कि कस्बों के नाम भी पारंपरिक रागों से लिए गए हैं। दादरी तहसील में कई बस्तियों के नाम प्रसिद्ध रागों से जुड़े हैं। इनमें नंदयम, सारंगपुर, बिलावाला, बृंदाबाना, टोडी, असावेरी, जयश्री, मलकोष्णा, हिंडोला, भैरवी और गोपी कल्याण आदि शामिल हैं। वहीं, जींद जिले में जय जय वंती, मालवी और अन्य संस्थाएं पाई जा सकती हैं।

हरियाणवी लोकगीतों में सात्विक प्रेम और विरह

हरियाणवी लोक-साहित्य का एक दूसरा पहलू भी है जो बहुत कोमल, संवेदनशील और सात्विक है। यह वह प्रेम है जिसे हम 'सात्विक' कह सकते हैं, क्योंकि इसमें कोई वासना नहीं है, कोई दिखावा नहीं है। यह प्रेम पति-पत्नी के उस अटूट रिश्ते पर आधारित है, जहां समर्पण ही सबसे बड़ा सुख है।

संस्कृति

दिनेश शर्मा 'दिनेश'

लोकगीत किसी भी समाज की आत्मा होते हैं। जब हम हरियाणा की बात करते हैं, तो अकसर लोगों का ध्यान यहां की वीरता, कुश्ती के मैदानों की तरफ जाता है। लेकिन, हरियाणवी लोक-साहित्य का एक दूसरा पहलू भी है जो बहुत कोमल, संवेदनशील और सात्विक है। यह वह प्रेम है जिसे हम 'सात्विक' कह सकते हैं, क्योंकि इसमें कोई वासना नहीं है, कोई दिखावा नहीं है। यह प्रेम पति-पत्नी के उस अटूट रिश्ते पर आधारित है, जहां समर्पण ही सबसे बड़ा सुख है। आज हम हरियाणवी लोकगीतों के आईने में उस प्रेम और विरह को देखने की कोशिश करेंगे, जो हमारी माटी की असल पहचान है।

हरियाणवी लोकगीतों में विरह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक अनुभव है। यहां का लोक-मानस प्रकृति के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि मौसम बदलते ही मन की अवस्था भी बदल जाती है। जब पिया परदेश में हो, तो सावन की फुहारें या कोयल की कूक किसी कांटे की तरह चुभने लगती है। एक स्त्री जब अपने पिया के वियोग में होती है, तो वह प्रकृति को ही अपना साथी मान लेती है। हरियाणवी लोक-साहित्य में मौजूद 'बारामासा' गीत में एक स्त्री का अपने प्रिय के प्रति सात्विक मोह और समाज की ओर से पूछे जाने वाले सवालों का जवाब देखिए:

आम्बों की ठंडी सी छांह, निंबों नीचे क्यूं खड़ी?
के तेरे पिया परदेस, के तेरी सास बुरी?
उड़ जा रे काले से काग, तन्नै मेरी के पड़ी?
ना मेरे पिया परदेस, ना है मेरी सास बुरी।
आया है साढ़ज मास, आवैं घन घोर कै,
जो घर होत्ते म्हारे लाल, बंगला छुवावते।

इस गीत में स्त्री की जो मर्यादा है, वह काबिले तारीफ है। वह स्त्री अपनी निजी पीड़ा को सार्वजनिक नहीं करती। वह अपनी गरिमा बनाए रखती है। जब मन में विरह की आग जल रही हो, तो बाहर की हर सुरीली चीज़ भी शोर लगने लगती है। कोयल की आवाज़ जो वसंत में लोगों को मोह लेती है, एक विरहिणी के लिए बेचैनी का कारण बन जाती है। यहां लोकगीत की वह गहराई देखिए, जहां वह कोयल से ही संवाद करने लगती है:

मेरे पिया गए परदेस, कोयलिया क्यूं बोल्लै सै।
यो सै मेरे पिया जी का नां, कोयलिया क्यूं बोल्लै सै।
तूं तै काली बणी भगवान, काम्मण उनकी गोरी सै।
मेरे मन म्हं उठैं सै हिलोर, तूं काल क्यूं हो री सै।
तूं तै काले बादल की गैल, उड़ जा री अम्बर म्हं।
बेबे! हम विरहण की रात कटै सै पीहर म्हं।

यहां नायिका को लगता है कि कोयल उसे उसके प्रिय की याद दिलाकर सता रही है। वह कोयल से ही शिकायत करती है कि तू क्यों बोल रही है? क्या तुझे पता है कि मेरे पिया परदेश में हैं? यह लोक-साहित्य का वह जादू है, जहां निर्जीव और सजीव को एक ही धागे में पिरो दिया गया है। पीहर (मायके) में बैठी वह नायिका, अपने पति से दूर है, और उसकी टीस इन शब्दों में साफ़ झलकती है।

पुराने समय में चिट्ठी का आना किसी बड़े आयोजन से कम नहीं था। चिट्ठी में लिखे शब्द प्रियतम की उपस्थिति का अहसास कराते थे। लेकिन उन शब्दों को पढ़ना और फिर रो पड़ना, यह एक विरहिणी की सहज प्रतिक्रिया है। जब सहेलियां घेरा डाल कर पूछती हैं कि जीजा जी ने क्या लिखा है, तो उस बेचारी का हाल देखिए:

बांचत बांचत हुई हाल बेहाल,
आंख्यां तैं आंसू ढारती
हाय री, अभागण नार,
पिया बिन दिन एकली काटती।

हरियाणवी लोकगीतों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे महलों की कहानियां नहीं सुनाते, बल्कि खेतों में पसीना बहाने वाली आम औरत की कहानी सुनाते हैं। यहां का प्रेम भी मेहनत से जुड़ा है। काम के बीच पिया की याद आना, यह दिखाता है कि प्रेम कोई अलग से किया जाने वाला काम नहीं, बल्कि जीने का एक हिस्सा है। देखिए, खेत में काम करती एक स्त्री जब अपने पति से मिलती है:

मेरे पिया की चिट्ठी आई बेबे ए छुट्टी मिलदी ना मूल
सिर पर घड़वा कांधै पै कसौल्ला बेबे हे
ईख नुलावण जांसीसम निच्चै घड़वा तार्या बेबे ए
बीघे का धर लिया घेर सारे सरीर पै तै आया पसिन्ना बेबे ए मुट्ठी हो गई लाल''

इस गीत में प्रेम का एक व्यावहारिक पक्ष दृष्टिगोचर होता है। पति का आना, काम छोड़ कर उसे लेने जाना, और फिर घर की बातें करना, यह जीवन का सबसे सुंदर दृश्य है। यहां यह दर्शाया गया है कि पति-पत्नी का रिश्ता केवल दो लोगों का नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ी का आधार भी है। यह सात्विक प्रेम है, जहां पसीने की गंध में भी प्यार की खुशबू है। बुढ़ापे में या तन्हाई में इंसान अपने अतीत की उन छोटी-छोटी बातों को याद करता है जो कभी सामान्य लगती थीं, लेकिन अब बहुत कीमती हो गई हैं। पति-पत्नी का साथ नहाना, साथ खाना, और वो 'मस्त' हो जाना, ये बातें आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में गायब होती जा रही हैं। लोकगीत हमें उसी सादगी की याद दिलाते हैं:

ये जुल्मी नैण बुरे कोए दिन याद करो
एक न्हाणा न्हाण आले दो जणैन्हा
न्हा मस्त हुए कोए दिन याद करो
एक खाणा खाण आले दो जणै

कितनी गहरी बात कही गई है! 'जुल्मी नैण' जो उन पुराने दिनों को याद करके दुखी हो रहे हैं। वह समय जब दो लोग साथ खाते-पीते थे और खुश रहते थे। यह प्रेम का वह शुद्ध रूप है, जहां किसी बड़े उपहार की आवश्यकता नहीं थी, बस साथ होना ही काफी था। सुख कहीं बाहर नहीं, बल्कि अपने ही घर में, अपने साथी के साथ बिताए गए पलों में है। हरियाणवी लोकगीतों में नायक और नायिका का संवाद बहुत चतुर होता है। वे सीधे-सीधे बात नहीं कहते, बल्कि गीतों के माध्यम से अपनी बात रखते हैं। यहां देखिए एक नायक जब अपनी नायिका से मिलने का बहाना ढूंढता है, तो वह कैसे अपनी चतुराई और मर्यादा का परिचय देती है:

हो रास्ते में पड़ गयो झील, छैल तेरे आने जाने में
हो तेरा बाप घर पर नहीं, छैल तेरी मय्या बुला रही सै
हो मेरी अम्मां गंगा नीर, नीर के दोष लगावो मत ना
हो तेरा भय्या घर पर नहीं, छैल तेरी भाभी बुला रही सै

यह गीत भारतीय संस्कृति का एक बेहतरीन उदाहरण है। नायक उसे बुलाने के लिए घर के हर सदस्य का नाम लेता है, लेकिन नायिका हर सदस्य को एक पवित्र चीज़ (गंगा नीर, जमुना नीर, कच्चा दूध) से जोड़कर उसे गलत साबित कर देती है। यह प्रेम में भी एक नैतिक मर्यादा का पालन है। यहां कोई वासना नहीं है, बल्कि एक-दूसरे को परखने और मर्यादा में रहने का एक अनूठा खेल है। हरियाणवी स्त्री का यह 'सतीत्व' और 'मर्यादा' लोक गीतों में ही सुरक्षित है।

हमारे यहां अतिथि को भगवान माना गया है, और जब वह अतिथि स्वयं 'प्रियतम' हो, तो सेवा का भाव और भी बढ़ जाता है। पत्नी अपने पति के लिए किस प्रकार का भाव रखती है, इसे देखिए:

म्हारे बाग का मिसरी मेवा चाख कै नै जाइये
तेरे हाथ की रै माली की रोटी ना भावै
कच्चे पाक्के फल तोड़ै मनै आच्छे ना लागैं
सेठ की सिठाणी पै तेरी रोटी पुआ द्यूंगी

यह केवल भोजन कराने का गीत नहीं है। यह प्रेम की वह पराकाष्ठा है, जहां एक पत्नी अपने पति को रोकना चाहती है। वह उसे अपने बगीचे का मेवा खिलाना चाहती है, उसे आराम देना चाहती है। असल में हरियाणा का लोक-साहित्य प्रेम और विरह को कभी भी रुग्ण या नकारात्मक नहीं मानता। यहां प्रेम केवल एक आकर्षण नहीं है, यह जीवन की एक बड़ी जिम्मेदारी है। पति-पत्नी का रिश्ता, जो इन गीतों का केंद्र है, वह त्याग और समझौते पर टिका है। चाहे वह परदेश जाने का दुःख हो या साथ बिताए पलों की याद, हरियाणवी लोक-गीतों ने इन भावनाओं को शब्दों की ऐसी माला में पिरोया है कि वे सदियों बाद भी ताजी लगती हैं। इन गीतों में वर्णित नायिका अबला नहीं है, वह एक सबल स्त्री है जो अपने परिवार के प्रति संवेदनशील है, अपनी मर्यादा के प्रति सजग है और अपने प्रियतम के प्रति समर्पित है।

अंत में, यही कह सकते हैं कि हरियाणवी लोक गीतों में जो सात्विक प्रेम और विरह का वर्णन है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। यह धरोहर हमें बताती है कि कैसे जीवन को सादगी से जीना है और कैसे रिश्तों को बिना किसी दिखावे के, केवल प्रेम और विश्वास से सींचना है। ये लोकगीत हमारे इतिहास के वो पन्ने हैं जिन्हें अगर हम मिटने देंगे, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए, इन गीतों का गायन और इनका चिंतन, हमारे लिए एक सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। हरियाणवी लोक-साहित्य का यह 'सात्विक प्रेम' सदा जीवंत रहे, यही कामना है।

हरियाणवी लोक गीतों में जो सात्विक प्रेम और विरह का वर्णन है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। यह धरोहर हमें बताती है कि कैसे जीवन को सादगी से जीना है और कैसे रिश्तों को बिना किसी दिखावे के, केवल प्रेम और विश्वास से सींचना है। ये लोकगीत हमारे इतिहास के वो पन्ने हैं जिन्हें अगर हम मिटने देंगे, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए, इन गीतों का गायन और इनका चिंतन, हमारे लिए एक सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। हरियाणवी लोक-साहित्य का यह 'सात्विक प्रेम' सदा जीवंत रहे, यही कामना है।

गजल | **रामफल गौड़**

हिम्मत करकै छोड़ उदास्सी

हिम्मत करकै छोड़ उदास्सी।
हांस हांस कै ले स्याबास्सी ।

इब इतिहास नवा लिखणा सै,
कथा पुराणी होल्यी बास्सी ।

अरधसरीरी नार सदा की,
मूरख कहण लगे थे दास्सी ।

करदे आच्छा काम कदे बी,
के मावस सै के पणवास्सी ।

भांड्डा फुट्टै च्योड़ै काल्लर,
कै दिन चाल्लैगी बदमास्सी ।

बण्या कैरियर जी की बाज्जी ,
करोंत पड़ै सै लेणा कांस्सी ।

आवैं बाळक ईब मिलण न्यूं,
पंछी हों ज्युक्कर परवास्सी।

सदा चालिए चाल आपणी,
नकल करण तै होसै हांस्सी।

कड़ै छणैं सैं दूध अर नीर,
हंस जड़ै आवैं फरमास्सी।

देख कुढंग गाम के रामफळ ,
लोग बणे इब सैहर निवास्सी ।

रागिनी | **भूपसिंह 'भारती'**

मतना काटो पेड़ां नै

मतना काटो पेड़ां नै, न्यू कहरी बेटी थारी।
शुद्ध हवा हमनै दे कै, रखवाली करते म्हारी।।

लालच के चक्कर म्हा थम, कती नहीं शर्माए,
पाच्छै पड़ रहे पेड़ा कै, ये जंगल काट भगाये,
जै ये पेड़ नहीं बचाये, ना बचै ये दुनियादारी।

धरती का सिंगार करै, करकै ये हरियाली,
बरखा नै ये ले कै आवै, ल्यावै सै खुशहाली,
जंगल करो नहीं खाली, पड़ा पै धरकै आरी।

धरती मां के घने लाडले, जन्म जन्म के साथी,
पर्यावरण शुद्ध करकै, ये बणते सदा हिमाती,
लूएं रोकै ताती ताती, दे सीली छाया प्यारी।

मीठे मीठे फल देवै, ये देवै भोजन पाणी,
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ, कहै बात या बेटी याणी,
समझ 'भारती' बात या स्याणी, फेर खिलै फुलवारी।
मतना काटो पेड़ा नै, न्यू कहरी बेटी थारी।।

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

परिवेश | **आज के दौर में गांव को 'स्मार्ट' बनाने के साथ-साथ उसे फिर से 'संवेदनशील' बनाने की आवश्यकता**

चौपाल की गूंज से डिजिटल मौन तक

बदलाव | **सरिता**

हरियाणा की माटी की खुशबू केवल खेतों की सौंधी सुगंध में नहीं, बल्कि उन अनकहे रिश्तों और सांस्कृतिक ताने-बाने में रची-बसी थी, जो कभी गांवों की पहचान हुआ करते थे। आज जब हम हरियाणा के ग्रामीण परिवेश को देखते हैं तो पाते हैं कि यह बदलाव एक संपूर्ण 'जीवन-दर्शन' का रूपांतरण है।

कभी जो चौपालें गांव का हृदय हुआ करती थीं, आज वहां सन्नाटा पसरा है और भौतिक विकास की चकाचौंध के बीच मानवीय संवेदनाओं का अर्थ बदल गया है। कुछ दशकों पहले तक, हरियाणा के गांवों में 'भाईचारा' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक ढंग था। गांव की चौपाल महज ईंट-पत्थर का एक ढांचा न होकर गांव का 'सुप्रीम कोर्ट' और 'सांस्कृतिक केंद्र' थी। शाम ढलते ही चौपाल पर जो चर्चाएं होती थीं, उनमें राजनीति से लेकर सारे गाँव का सुख-दुःख, लोक-कला और रागनियों की समीक्षा तक शामिल होती थी। उस दौर में गांव की हर खुशी और हर गम साझा होता था। फसल की कटाई हो या किसी के घर विवाह, पूरा गांव एक परिवार की तरह खड़ा होता था। कुंओं की जगत पर महिलाओं का मिलना और लोकगीतों के माध्यम से सुख-दुख साझा करना, एक ऐसा 'सोशल नेटवर्क' था जो आज के डिजिटल युग से कहीं अधिक मजबूत था। आपको याद है ना .... 'मेरे सिर पै बंटा टोकणी' और 'पाणी लेण मैं तो कुंए पै गयी थी' ये लोकगीत शाम को कानों में पड़ते थे तो दिनभर की थकान दूर हो जाती थी। उस समय की भाषा में मिठास थी और व्यवहार में 'मान-मर्यादा' का भाव था। व्यक्ति अपनी पहचान से अधिक अपने गोत्र और गांव की प्रतिष्ठा के प्रति समर्पित रहता था। वहां तर्क के साथ-साथ 'लोक-विवेक' को अधिक महत्व दिया जाता था।

समय का पहिया घूमा, तो ग्रामीण हरियाणा का भौतिक स्वरूप तेजी से बदलने लगा। कच्चे घरों की जगह कंक्रीट के बहुमंजिला मकानों ने ले ली। इस निर्माण के साथ ही 'आंगन' सिमट गए। संयुक्त परिवार, जो सुरक्षा और संस्कारों के संवाहक थे, एकल परिवारों में टूट गए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी बड़ा बदलाव आया। खेती के साथ पशुपालन और पारंपरिक हस्तशिल्प की महत्ता कम होती गई। युवा पीढ़ी का झुकाव शहरों की ओर बढ़ा, जिससे गांवों में 'बुजुर्गों का अकेलापन' एक नई चुनौती बनकर उभरा। जो चौपाल कभी विचारों के आदान-प्रदान का केंद्र थी, वहां अब केवल बुजुर्गों की यादें शेष बची हैं या फिर वह केवल चुनाव के समय राजनीतिक अखाड़ा बन गई हैं। आज का ग्रामीण परिवेश एक अजीब से द्वंद्व में जी रहा है। एक तरफ भौतिक सुख-सुविधाएं हैं तो दूसरी तरफ मानसिक तनाव। मोबाइल और सोशल मीडिया ने गांव को वैश्विक दुनिया से तो जोड़ दिया है, लेकिन पड़ोसियों से दूरी भी बढ़ा दी है। अब लोग एक ही गांव में रहते हुए भी एक-दूसरे से डिजिटल तरीके से जुड़े हैं, लेकिन आमने-सामने बैठकर 'दिल की बात' करने का वक्त कम हो गया है। सबसे बड़ा बदलाव भाषा और संस्कारों में आया है। हरियाणवी बोली, जो अपनी ओजस्विता के लिए जानी जाती थी, वह आज अपनी शुद्धता खो रही है।

नई पीढ़ी के लिए लोक-साहित्य और रागनियों का स्थान अभद्र गीतों और फूहड़ता परोसती वेब सीरीज ने ले लिया है। सोशल मीडिया पर अश्लील और द्विअर्थी संवादों को लेकर सामग्री परोसकर लाइक और व्यूज बटोरते बुजुर्ग, महिलाएं तथा बच्चे बहुसंख्या में देखे जा सकते हैं। संस्कारों का वह ढांचा, जो नैतिकता और बड़ों के प्रति सम्मान पर टिका था, वह अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भेंट चढ़ता दिखाई दे रहा है। जब हम इन दो युगों की तुलना करते हैं, तो यह कहना कठिन है कि परिवर्तन पूरी तरह नकारात्मक है। आज का ग्रामीण हरियाणा अधिक शिक्षित है, जागरूक है और आर्थिक रूप से सशक्त भी। प्रश्न यह है कि क्या हमने विकास की दौड़ में अपनी जड़ों को सुरक्षित रखा है? प्राचीन हरियाणा में जो 'सामूहिकता' थी, वह आज की 'वैयक्तिकता' में कहीं खो गई है। पहले जहां व्यक्ति 'गांव का हिस्सा' था, वहीं आज वह 'दुनिया का नागरिक' बनने की होड़ में है। इस दौड़ में सबसे बड़ी क्षति 'लोक-स्मृतियों' की हुई है। दादा-दादी की कहानियों से मिलने वाले संस्कार और चौपालों पर मिलने वाले व्यावहारिक ज्ञान का स्थान अब गूगल और एआई ने ले लिया है।

हरियाणा के बदलते परिवेश को नकारना असंभव है, क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। लेकिन सांस्कृतिक विस्थापन को रोकना हमारे हाथ में है। अगर हम उस सोच को, उस भाईचारे को, और उस लोक-चेतना को अपने जीवन में फिर से स्थान दे सकें, तो हम आधुनिकता के साथ-साथ अपनी जड़ों को भी जीवित रख पाएंगे। दरअसल आज के बदलते दौर में गांव को 'स्मार्ट' बनाने के साथ-साथ हमें उसे फिर से 'संवेदनशील' बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि अंततः, एक समाज की असली पहचान उसके कंक्रीट के जंगलों से नहीं, बल्कि उस भाईचारे से होती है जो मुश्किल घड़ी में एक-दूसरे के काम आता है।

सांस्कृतिक विरासत के सजग प्रहरी हैं मुकेश काले

कलाकार | **अंकुर शर्मा**

हरियाणा की माटी और यहां की आबोहवा में रची-बसी रागनियों ने न केवल इस प्रदेश को वैश्विक स्तर पर पहचान दी है, बल्कि सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक विरासत को भी जीवंत रखा है। जब हम हरियाणा के लोक रंग की चर्चा करते हैं, तो अक्सर हमारा ध्यान पुराने दौर के गायकों पर जाता है, लेकिन वर्तमान समय में रेवाड़ी जिले के एक युवा कलाकार ने आधुनिकता और परंपरा के बीच एक ऐसा सेतु बनाया है जिसने सबको अचंभित कर दिया है। यह नाम है-मुकेश काले। मुकेश काले, जिनका मूल नाम मुकेश जांगड़ा है, का जन्म 29 नवंबर, 1999 को हरियाणा के रेवाड़ी जिले के एक छोटे से गांव देहलावास गुलाबपुरा में हुआ।

इनके पिता श्री हरिप्रकाश और माता आशा देवी ने बचपन से ही उन्हें संस्कारों की घुट्टी पिलाई। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े काले का मन बचपन से ही चौपालों में होने वाली भजन मंडलियों और रागनियों में रमता था, जहां वे गांव की मंडलियों और जागरणों का हिस्सा बनते थे।अक्सर यह माना जाता है कि उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में जाने के बाद युवा अपनी जड़ों से कट जाते हैं, लेकिन काले ने इस धारणा को गलत साबित किया। उन्होंने देश के प्रतिष्ठित संस्थान एनआईटी, कुरुक्षेत्र से बी.टेक. की डिग्री हासिल की और वर्तमान में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड में एक इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्षेत्र की व्यस्तताओं के बावजूद, उनके भीतर का कलाकार निरंतर सक्रिय रहा है। काले की गायकी की जड़ें उन दिग्गजों के सान्निध्य में गहरी हुई हैं, जिन्होंने रेडियो और सांग के माध्यम से हरियाणा की लोक कला को जीवित रखा। वे प्रेम सिंह देहाती, रेडियो कलाकार गुलाब सिंह खांडेवाल, निरंजन सांगी और गढ़वा लाइन के मास्टर सतबीर पालेराम दहिया को अपना आदर्श मानते हैं और लंबे समय तक उन्हें ही सुन-सुनकर सीखा है।

उनकी लोकगीतों की ओर रुचि तब जगी, जब उन्होंने अनुभव किया कि पंडित लखमीचंद ने अपनी प्रसिद्ध रागनियों की धुनें लोकगीतों से ही प्रेरित होकर बनाई थीं। आज 'कइयो री खाती के लड़के ने', 'राम-लक्ष्मण दशरथ के बेटे' और 'दादा इस जांदे परदेस जाइये' उनके सबसे प्रिय लोकगीत हैं। मुकेश काले की सबसे बड़ी पहचान उनकी 'मोमेंटरी' गायकी है, जो किसी वाद्य यंत्र की मोहताज नहीं है। वे अक्सर एक साधारण मेज, स्कूल की बेंच या केवल अपने हाथ की थाप से ही वह लय पैदा कर देते हैं, जिसे सुनने के लिए लाखों लोग उनके सोशल मीडिया हैंडल पर उमड़ पड़ते हैं। उनका मानना है कि लोक संगीत लोगों के द्वारा, लोगों के लिए और लोगों के बीच ही जन्म लेता है। वे तर्क देते हैं कि जैसे कुम्हार बर्तन बनाते हुए या माताएं स्वेटर बुनते हुए गाती हैं, उन्हें किसी साज़ की ज़रूरत नहीं होती। संगीत अगर आपके भीतर है, तो वह कंप्यूटर पर काम करते हुए टेबल की थाप से भी प्रकट हो सकता है। उनकी इसी मौलिकता के कारण आज इंस्टाग्राम पर 62,000 और फेसबुक पर 36,000 से अधिक अनुयायी उनसे जुड़े हैं। काले केवल एक गायक ही नहीं, बल्कि एक गंभीर शोधार्थी भी हैं। वे उन 50-60 कवियों की रचनाओं को मुख्यधारा में लाना चाहते हैं जो समय के साथ दादा लखमीचंद और मांगेराम जैसे दिग्गजों के प्रभामंडल में कहीं ओझल हो गए। मुकेश काले इन विस्मृत रचनाओं पर निजी तौर पर शोध कर रहे हैं ताकि उन्हें पुनर्जीवित किया जा सके। उनका मुख्य ध्येय हरियाणा के 'लोक संगीत' को वैश्विक पहचान दिलाना है। वे भविष्य में एक 'हरियाणवी लोक बैंड' बनाने की दिशा में भी अग्रसर हैं, जो पारंपरिक रागनियों को अंतरराष्ट्रीय मंचों तक ले जा सके।'

मुकेश का सबसे बड़ा ध्येय पूर्णतः 'हरियाणवी' बनना है। वे सोशल मीडिया के माध्यम से हरियाणवी बोली को उसी मूल ध्वनि और उच्चारण में लिखना सीख रहे हैं, जैसा हम बोलते हैं, ताकि 'जेन-जी' पीढ़ी अपनी मातृभाषा की विशिष्टता को समझ सके।

मुकेश का सबसे बड़ा ध्येय पूर्णतः 'हरियाणवी' बनना है। वे सोशल मीडिया के माध्यम से हरियाणवी भाषा को उसी मूल ध्वनि और उच्चारण में लिखना सीख रहे हैं जैसा हम बोलते हैं, ताकि 'जेन-जी' पीढ़ी अपनी मातृभाषा की विशिष्टता को समझ सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष हरियाणा का 'स्वर्ण जयंती गीत' प्रस्तुत कर चुके काले सिद्ध कर रहे हैं कि आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों को छोड़ना नहीं है। एक इंजीनियर की तार्किक बुद्धि और एक लोक कलाकार का संवेदनशील हृदय जब साथ मिलते हैं, तो मुकेश काले जैसी प्रतिभा का जन्म होता है। आज के 'अपसंस्कृति' के दौर में वे हरियाणा की सांस्कृतिक चेतना के एक मजबूत स्तंभ हैं। उनकी यह यात्रा उन तमाम युवाओं के लिए प्रेरणा है जो अपनी संस्कृति को 'पिछड़ा' मानकर उससे दूर भागते हैं।

खबर संक्षेप

चौ. बंसीलाल का जीवन जनसेवा को रहा समर्पित

तोशाम। हरियाणा के आधुनिक निर्माता कहे जाने वाले स्व. चौ. बंसीलाल के नाम को लेकर छिड़ी बहस ने अब तूल पकड़ लिया है। राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा द्वारा पंचकूला में दिए गए बयान पर उनके पौत्र और कांग्रेस अध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी ने कड़ा एतराज जताया है। अनिरुद्ध चौधरी ने स्पष्ट किया कि राजनीति में शब्दों की मर्यादा सबसे ऊपर होनी चाहिए, विशेषकर उन विभूतियों के लिए जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। अनिरुद्ध चौधरी ने अपने बयान में कहा कि भले ही बीजेपी सांसद रेखा शर्मा यह तर्क दें कि उन्होंने बंसीलाल का नाम गलती से लिया, लेकिन इस एक चूक ने प्रदेश के लाखों लोगों के स्वाभिमान को चोट पहुंचाई है।

सड़क हादसे में पति की मौत, पत्नी व बेटा गंभीर

नारनौल। सड़क हादसे में व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि उसकी पत्नी व तीन साल का बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया। वहीं मृतक का शव नागरिक अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए रखा गया। जानकारी के अनुसार गांव अकबरपुर रामू निवासी साहिल शनिवार शाम अपनी पत्नी उषा भारती 25 वर्ष व तीन साल के बेटे इशान के साथ बाइक पर सवार होकर अपनी ससुराल राजस्थान के झुंझुनूं जिले के गांव सागा की ओर जा रहा था। सूचना मिलते ही लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

श्रीमद् भागवत कथा में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

जीवन जीने की एक संपूर्ण कला व सच्ची प्रेरणा श्रीमद भागवत कथा : आशु कामरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

रामगंज महोल्ला स्थित श्रीमती देवी बाई आश्रम में श्रद्धा, भक्ति और सेवा की त्रिवेणी बह निकली है। आश्रम के प्रांगण में पांचवीं श्रीमद भागवत कथा का शुभारंभ रविवार को पूर्ण विधि-विधान और मंत्रोच्चारण के साथ किया गया। वृंदावन से विशेष रूप से पधारे सुप्रसिद्ध कथावाचक पंडित तेजभूषण शास्त्री ने व्यासपीठ से अमृत वर्षा शुरू की, जिससे पूरा वातावरण राधे-राधे के जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता अविनाश सरदाना ने की। आश्रम के प्रधान आशु कामरा ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए भागवत महापुराण की महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्रीमद भागवत कथा केवल सात दिनों का धार्मिक आयोजन मात्र नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक संपूर्ण कला और सच्ची प्रेरणा है। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएं हमें सिखाती हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी सेवा का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह कथा मनुष्य को सत्य और सदाचार की ओर अग्रसर कर एक बेहतर समाज के निर्माण का आधार बनती है। इस आयोजन की एक प्रमुख विशेषता प्रतिदिन होने वाला कन्या पूजन एवं सम्मान कार्यक्रम है। आश्रम द्वारा नन्हीं कन्याओं को साक्षात देवी का स्वरूप मानकर उनका आदर-सत्कार किया जा रहा है।

भिवानी। शहर में कलशयात्रा निकालते हुए।

संस्कारों का होगा संचार

आयोजकों का मानना है कि इस पहल से समाज में नारी शक्ति के प्रति सम्मान और नई पीढ़ी में सनातन संस्कारों का संचार होगा। कथा स्थल पर मीनू मुंजाल, कविता पंडितानी और अन्य मातृशक्ति (अष्ट नारी शक्ति) इस व्यवस्था को सुचारू रूप से संभालने में जुटी हुई हैं। कथा के प्रथम दिन पंजाबी संस्कृति की जीवंत झलक भी देखने को मिली। श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव में सराबोर होकर डांडिया प्रस्तुत किया। विशेष आकर्षण का केंद्र श्रद्धालु दंपत्ति श्याम सुंदर काटपाल एवं नैंसी काटपाल रहे, जिन्होंने अत्यंत श्रद्धा के साथ श्रीमद भागवत को अपने सिर पर धारण कर पंडाल में प्रवेश किया। इस दृश्य ने उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। आयोजकों ने बताया कि कि कथा के विश्राम के साथ ही 3 मई को आश्रम परिसर में एक दिव्यांगजन सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। इसमें दिव्यांगजनों और उनकी सेवा में समर्पित संस्थाओं को सम्मानित कर समाज में सेवा का संदेश दिया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में कैलाश खुराना, धर्मदेव खुराना, महेश बवेजा, राम नागपाल, हनी सहित आश्रम के अनेक स्वयंसेवकों का विशेष सहयोग रहा। प्रथम दिवस पर ही भारी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने कथा का श्रवण किया और प्रसाद ग्रहण किया।

अढ़ाई कोसी नगर परिक्रमा के 380 दिन हुए पूर्ण, वेदनाथ ने दिया आशीर्वाद

भिवानी। अढाई कोसी नगर परिक्रमा करते हुए।

भिवानी। छोटी काशी भिवानी की धरा रविवार को पूरी तरह भक्ति के रंग में सराबोर नजर आई। युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट के बैनर तले हनुमान जोहड़ी मंदिर परिवार द्वारा मंदिर के महंत बालयोगी चरणदास महाराज के नेतृत्व में निकाली जा रही अढ़ाई कोसी नगर परिक्रमा ने रविवार को 380 दिन पूरे कर लिए। इस दौरान विशेष रूप से महंत वेदनाथ महाराज परिक्रमा में शामिल हुए तथा श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दिया। गाजे-बाजे और भक्ति गीतों की धुनों पर थिरकते श्रद्धालुओं ने पूरे शहर को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए महंत वेदनाथ एवं महंत बालयोगी चरणदास महाराज ने कहा कि भिवानी की इस पावन धरा पर अढ़ाई कोसी परिक्रमा का उद्देश्य केवल एक धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं है।

निकाली जाएगी परिक्रमा

इसका मुख्य लक्ष्य समाज में एकता की भावना जागृत करना और हमारी समृद्ध सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है। महंत चरणदास महाराज ने कहा कि जिस प्रकार मथुरा और वृंदावन में परिक्रमा का विशेष धार्मिक महत्व है, उसी परंपरा को भिवानी में भी जीवंत किया जा रहा है। पिछले 10 महीनों से श्रद्धालु जिस निष्ठा के साथ इस भक्ति मार्ग पर चल रहे हैं, वह शहर की धार्मिक आस्था का प्रमाण है। इस निरंतर जारी नगर परिक्रमा के 400 दिन पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आगामी 16 मई को शहर में सुबह 7 बजे एक विशाल नगर परिक्रमा निकाली जाएगी।

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाज के लोग।

महापुरुष सभी समुदाय के लोगों के लिए आदरणीय : नेपाल सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

कैबिनेट मंत्री श्याम सिंह राणा के पुत्र नेपाल सिंह रविवार को 9 मई को अम्बाला के शहजाद पुर में होने वाले महाराणा प्रताप जयंती समारोह का न्यौता देने के लिए भिवानी पहुंचे। उन्होंने लोगों से जयंती समारोह में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि जयंती समारोह में बतौर मुख्यअतिथि मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी होंगे।

उन्होंने कहा कि महापुरुष किसी एक विशेष बिरादरी व समुदाय के नहीं बल्कि हर समाज के लोगों के लिए आदरणीय होते है। उनकी स्मृति में आयोजित कार्यक्रमों में सभी को बढ चढ कर भाग लेना चाहिए। क्योंकि महापुरुष समाज में फैली बुराईयों को मिटाने के लिए कार्य करते है। उन्होंने लोगों से महाराणा प्रताप के जीवन से शिक्षा लेकर चलने का आहवान किया। इस मौके पर हरियाणा राजपूत विकास महासभा के अध्यक्ष परमजीत सिंह मड्डू,विनोद थम्बड़, पूर्व विधायक शशि परमार, राजपूत सभा के जिला अध्यक्ष बृजपाल पप्पु ने संयुक्त रूप से कहा कि जयंती समारोह भीड़ की लिहाज से ऐतिहासिक होगा। क्योंकि लोगों में जयंती समारोह के प्रति जबरदस्त उत्साह है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप देश के सबसे पहले स्वत्रता सेनानी थे। जिन्होंने देश से बाहरी आक्रांताओं को खंदेड़ने का कार्य किया। देश की आजादी के लिए अनेक युद्ध लड़े और आक्रमणकारियों को दबे पांव वापस जाना पड़ा।

अम्बाला में होगा कार्यक्रम

नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह, ओमबीर तंवर ने कहा कि महा पुरुष किसी एक विशेष बिरादरी व समाज के नहीं होते,बल्कि सभी समाज के लोगों के लिए आदरणीय होते है। उन्होंने भिवानी से महाराणा की जयंती पर 9 मई को अम्बाला के शहजादपुर में कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सैकड़ों गाडियों में बैठकर लोग पहुचेंगे।

ये रहे मौजद

इस मौके पर कर्मबीर, रमेश परमार, सुंदरपाल कैरू सरपंच, नसीब, सुरेश,प्रदीप जिला परिषद, जयपाल लेघा, जयदेव तंवर जाटू लोहारी, नेत्रपाल सिंह, विरेंद्र, विनोद, बीर सिंह, जसवंत के अलावा अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

भिवानी ग्रामीण मंडल की बैठक में संगठन की मजबूती पर दिया जोर

■ सरकार की योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्ति तक पहुंचाना प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व : सुनील

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भारतीय जनता पार्टी की सांगठनिक मजबूती और केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के संकल्प के साथ भिवानी ग्रामीण मंडल में बैठकों का सिलसिला जारी है।

ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सुनील भारद्वाज धारेड़ू की अध्यक्षता में विभिन्न शक्ति केंद्रों पर महत्वपूर्ण बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में नौरंगाबाद, बामला, फूलपुरा, सांगा, कायला, बडाला और धारेड़ू जैसे प्रमुख गांवों के शक्ति केंद्र शामिल रहे। बैठक का मुख्य उद्देश्य बूथ स्तर पर पार्टी के ढांचे को अभेद्य बनाना और सरकार की उपलब्धियों को लेकर जनता के बीच जाने का रोडमैप तैयार करना था। बैठकों के दौरान अलग-अलग केंद्रों पर पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने शिरकत की।

भिवानी। भिवानी ग्रामीण मंडल शक्ति केंद्र की बैठक लेते पदाधिकारी।

पानी के रिसाव से चौगान माता मंदिर गिरने की कगार पर

भिवानी। शहर के हनुमान गेट क्षेत्र में लंबे समय से जारी पानी के रिसाव ने अब गंभीर रूप ले लिया है। लगातार हो रहे इस रिसाव के कारण क्षेत्र स्थित चौगान माता मंदिर की नींव बुरी तरह प्रभावित हो चुकी है और मंदिर के गिरने का खतरा पैदा हो गया है। अगर समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए तो कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। सैनी विचार मंच के राष्ट्रीय संयोजक सुरेश सैनी व वार्ड 25 के पार्षद विनोद प्रजापति ने उपायुक्त के अनुसार, पानी की पाइपलाइन में लीकेज के चलते लगातार पानी जमीन में समा रहा है, जिससे मंदिर के आसपास की मिट्टी कमजोर होकर धंसने लगी है।

भगवान परशुराम को किया नमन

भगवान परशुराम के मार्ग पर चलकर संस्कारयुक्त समाज की करें रचना: बड़ौली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

भगवान परशुराम ने सदैव अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया तथा समाज को सदमार्ग दिखाने का काम किया, हमें उनके बताए सद्मार्ग पर चलकर सामाजिक एकजुटता व संस्कारयुक्त भाईचारे का वातावरण तैयार करना चाहिए, ये बात भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बडोली ने बतौर मुख्यतिथि ब्राह्मण भवन में ब्राह्मण सभा सिंदौलिया खाप चौरासी के परशुराम जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। सभा के अध्यक्ष बजरंगलाल शर्मा के नेतृत्व में सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पगड़ी पहनाकर मोहनलाल बड़ौली, अतिथि विशिष्ट अतिथि सांसद धर्मवीर सिंह, विधायक उमेद पातुवास, भाजपा जिलाध्यक्ष इंजीनियर सुनील हड़ोदी का अभिनंदन किया। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बड़ौली ने कहा कि भगवान परशुराम ने शक्ति का उपयोग कमजोर की रक्षा और अत्याचारी के दमन के लिए करना सिखाया। आज भी हमें अन्याय देखकर चुप नहीं बैठना है, ज्ञान और तप की शक्ति को जनकल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए। परशुराम भगवान शिव के परम शिष्य थे।

बाढ़ड़ा। ब्राह्मण भवन में जयंती कार्यक्रम में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बडोली।

ये रहे मौजूद

ब्राह्मण सभा के पूर्व अध्यक्ष अमरचंद चैहड़, सरंक्षक विजय मोटू, खाप महासचिव सुनील चेयरमैन, चेयरमैन सुधीर चांदवास, जजपा अध्यक्ष विजय श्योराण, भाजपा भिवानी जिलाध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक, कोषाध्यक्ष सीताराम शर्मा, पूर्व चेयरमैन डा. सुरेश शर्मा, तरसेम शर्मा पच्चीस अध्यक्ष, कन्नी प्रधान मास्टर रामनाथ शर्मा, पूर्व प्राचार्य रोशन लाल शर्मा, राधेश्याम शर्मा, रामनिवास शर्मा पिचौपा, पंकज शर्मा काकडोली, महेन्द्र शर्मा बाढड़ा, मुनीश बडेसरा, धन सिंह शास्त्री, रमेश शास्त्री, हरीश शर्मा बिजना आदि मौजूद रहे।

सूबेदार महावीर की पत्नी 110 वर्षीय केसर देवी का निधन

■ केसर देवी ने पूरा जीवन सादगी एवं त्याग के साथ किया व्यतीत : खरेटा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

देश के गौरवशाली इतिहास और शहादत की जीवंत गवाह रही तोशाम क्षेत्र की वयोवृद्ध महिला केसर देवी का 110 वर्ष में निधन से समूचे क्षेत्र में शोक की लहर है। केसर देवी द्वितीय विश्व युद्ध के वीर शहीद सूबेदार महावीर सिंह की धर्मपत्नी थी।

उनके निधन पर ग्राम स्वराज किसान मोर्चा के पदाधिकारियों ने गांव खरकड़ी में उनके निवास स्थान पर पहुंचकर दुःख व्यक्त किया और परिवार को ढांढस बंधाया। केसर देवी का जीवन किसी प्रेरणापुंज से कम नहीं था, उनके पति सूबेदार महावीर सिंह ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया था। पति की शहादत के बाद केसर देवी ने धैर्य, सादगी और स्वाभिमान के साथ अपने परिवार का पालन-पोषण किया, वह आज की पीढ़ी के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। केसर देवी के निधन पर किसान मोर्चा के युवा प्रदेश अध्यक्ष युद्धवीर खरेटा, प्रदेश महासचिव मास्टर रघुवीर भेरा आदि पहुंचे। उन्होंने कहा कि केसर देवी ने शहीद की पत्नी के रूप में पूरा जीवन सादगी एवं त्याग के साथ व्यतीत किया, वह हमें अपनी जड़ों और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की याद दिलाता है।

संविधान लीडरशिप प्रोग्राम से मजबूत होगा लोकतंत्र का पांचवां स्तंभ : अमन

■ डिजिटल युग में वैकल्पिक आवाजों को भी संगठित कर लड़

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय मीडिया पैनलिस्ट अमन वशिष्ठ ने भिवानी प्रवास के दौरान पत्रकार वार्ता को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने केंद्र व हरियाणा की भाजपा सरकार पर तीखे प्रहार किए और युवा कांग्रेस द्वारा शुरू किए गए संविधान लीडरशिप प्रोग्राम की रूपरेखा साझा की।

वशिष्ठ ने स्पष्ट किया कि वर्तमान दौर में जब मुख्यधारा का मीडिया अपनी भूमिका से भटक रहा है, तब वैकल्पिक सोशल मीडिया ही लोकतंत्र का असली रक्षक बनकर उभरेगा। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए अमन वशिष्ठ ने बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े और नेता विपक्ष राहुल गांधी के दिशा-निर्देशों पर देश भर में इस विशेष कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इस प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य लोकतंत्र के पांचवें स्तंभ यानी जमीनी वैकल्पिक सोशल मीडिया को मजबूती प्रदान करना है। हम उन निर्भीक और निडर लोगों को अपने साथ जोड़ रहे हैं जो बिना किसी डर के गलत नीतियों के खिलाफ आवाज उठाते हैं और जनता के जायज मुद्दों पर सरकार की आंखों में आंखें डालकर प्रश्न करते हैं।

भिवानी। पत्रकारों से बातचीत करते हुए।

आवाज बुलंद करेंगे

पत्रकार वार्ता के दौरान वशिष्ठ ने कहा कि आज मीडिया महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, और बदहाल शिक्षा व स्वास्थ्य प्रणाली जैसे गंभीर विषयों पर मीडिया मौन है। यही नहीं मुख्यधारा की चर्चाओं में महिलाओं, किसानों और मजदूरों के साथ हो रहे अन्याय को दिखाने के बजाय केवल हिंदू-मुस्लिम और ध्रुवीकरण वाले मुद्दों को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि जब तंत्र विफल होने लगे तो जागरूक नागरिक और स्वतंत्र सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स ही देश की आवाज बुलंद करेंगे।

चौधरी बंसीलाल व भजनलाल ने करवाया हरियाणा का विकास

सांसद सार्वजनिक रूप से मांगें माफी

■ चौधरी बंसीलाल व भजनलाल के परिजन करें सांसद रेखा के खिलाफ कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय बंसीलाल ने बिना किसी भेदभाव के पूरे हरियाणा प्रदेश का विकास करवाया, जिनकी पुत्रवधु पूर्व मंत्री किरण चौधरी व पौत्री कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी भाजपा सरकार में मंत्री हैं। वहीं पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल ने अपने कार्यकाल में अनेक विकास कार्य करवाए, उनके पुत्र पूर्व सांसद कुलदीप बिश्नोई व पौत्र भव्य बिश्नोई भाजपा में वरिष्ठ नेता हैं। दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों को राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा ने पंचकुला में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें गुंढागर्दी की बात कर उन्हें बदनाम करने का काम किया है, ये बात छात्र संघर्ष समिति, युवा कल्याण संगठन, वरिष्ठ नागरिक एसोसिएशन व एक विचार-एक सोच मंच के सदस्यों ने कहा कि इन नेताओं ने पूरे हरियाणा प्रदेश को जीरो से लेकर नंबर वन तक ले जाने का कार्य किया है। इन नेताओं के खिलाफ असभ्य भाषा का प्रयोग करने वालों को पार्टी से बाहर किया जाना चाहिए।

पूरी निष्ठा से बूथ स्तर पर निभाएंगे सक्रिय भूमिका

तोशाम। रविवार को कैरू मण्डल के सभी बूथों पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और स्थानीय ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' को बड़े उत्साह के साथ सुना। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री द्वारा साझा किए गए प्रेरक प्रसंगों और जनकल्याणकारी संदेशों से प्रेरणा ली। 'मन की बात' कार्यक्रम के पश्चात, आगामी सांगठनिक कार्यों और क्षेत्र के विकास कार्यों को लेकर एक महत्वपूर्ण बूथ बैठक का भी सफल आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता मण्डल अध्यक्ष सतीश वर्मा ने ओर अशोक तंवर ने की।

राजस्थान सरकार

कार्यालय तहसीलदार (भू.अ.)
भानीपुरा (चूरू)

क्रमांक - भू.अ./2026 / 4684
दिनांक 13/4/26

सूचना बनाम सर्वसाधारण

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थीगण सुरेन्द्र कुमार, सुबेसिंह पुत्रगण सोकरण उर्फ श्योकरण जाति जाट निवासी नकीपुर तहसील लोहारू जिला भिवानी हरियाणा ने प्रार्थना-पत्र पेश कर निवेदन किया है कि प्रार्थी के पिता श्योकरण पुत्र बेगराज जाति जाट निवासी नकीपुर तहसील लोहारू जिला भिवानी हरियाणा ने अपने जीवन काल में रोही शिमला तहसील भानीपुरा जिला चूरू राजस्थान के खसरा नं0 468 रकबा 7.5900 हैक्टेयर की वसीयत संयुक्त पंजीयन अधिकारी भानीपुरा के यहां दिनांक 19.08.2019 को अपने पुत्रगण सुरेन्द्र कुमार, सुबेसिंह पुत्रगण सोकरण उर्फ श्योकरण जाति जाट निवासीगण नकीपुर तहसील लोहारू जिला भिवानी हरियाणा के पक्ष में पंजीयन करवायी थी। प्रार्थीगण के पिता श्योकरण पुत्र बेगराज जाति जाट निवासी नकीपुर तहसील लोहारू जिला भिवानी हरियाणा का दिनांक 21.05.2024 को स्वर्गवास हो चुका है प्रार्थीगण इस भूमि का नामांतकरण वसीयतानुसार दर्ज करवाना चाहते है।
अतः समस्त हितबध्द व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि वसीयत बाबत किसी को कोई आपत्ति /ऐतराज हो तो सूचना प्रकाशन की तिथि 15 दिवस के अन्दर अपना ऐतराज/आपत्ति व्यक्तिगत रूप से अथवा अपने जरिये अधिवक्ता पेश कर सकते है। अवधि गुजरने के पश्चात कोई दावा आपत्ति स्वीकार नहीं की जायेगी एवं नियमानुसार वसीयत का निर्णय कर नामान्तकरण की कार्यावाही कर दी जायेगी।

हस्ता/-तहसीलदार (भू.अ.) भानीपुरा

ब्रह्माकुमारीज की शाखा सिद्धिधाम में संगोष्ठी को संबोधित करती बीके सुमित्रा।

योग एवं कर्मयोग से होगा जीवन सार्थक

भिवानी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज की शाखा सिद्धिधाम में योग एवं कर्म योग पर आधारित आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए शाखा प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन ने बताया कि कुछ लोग कर्म विहीन होकर जंगलों में जाते हैं, फिर दूसरों का कमाया खाते हैं तो कर्म न करने पर उनपर दूसरों द्वारा कमाया खाने पर बोझ चढ़ता है। उन्होंने कहा कि अनेक लोगों ने कर्म को ही पूजा मान लिया, लेकिन खाने को कर्म करना होता है। उन्होंने कहा कि पूजा के समय काम याद आया, स्वप्न में काम ही याद रहे हैं, यहां भगवान कहते हैं कर्म अलग नहीं है, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। माना काम भले कुछ भी करें मन-बुद्धि की एकाग्रता हो, क्योंकि एकाग्र बुद्धि नहीं होगी तो कर्म में जजमेंट ठीक नहीं होगी और कार्य बिगड़ जाएगा। इस अवसर पर बीके आरती, बीके सुषमा, बीके कविता, बीके नीलम, बीके सुशील, बीके शारदा, बीके कविता, बीके माया, बीके राजरानी आदि मौजूद रहे।

धरना स्थल का टैंट उखाड़ने पर जताई नाराजगी

प्रेमनगरवासी रोजगार के लिए आंदोलन करेंगे तेज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

गांव प्रेमनगर की जायज मांगों के प्रति चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय प्रशासन और सरकार द्वारा लंबे समय से अपनाए जा रहे उदासीन रवैये के खफा होकर गांव प्रेमनगर के ग्रामीणों ने संघर्ष तेज करने का निर्णय लिया है।

रविवार को धरना समिति के प्रधान कैप्टन कलम सिंह की अध्यक्षता में ग्रामीणों की आपात बैठक हुई। जिसमें धरना स्थल का टैंट उखाड़ने के प्रति रोष प्रकट करते हुए सर्वसम्मति से संघर्ष तेज करने का निर्णय लिया गया। यह जानकारी देते हुए सरपंच राजेश कुमार और धरना समिति के प्रधान कैप्टन कलम सिंह ने बताया कि गांव प्रेमनगर ने करीबन 10 से 12 वर्ष पूर्व चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए 131 एकड़ भूमि मुफ्त सरकार को दी थी। इसकी ऐवज में ग्रामीणों को चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय में रोजगार मिलने की उम्मीद थी। परन्तु उन्हे ऐसा कुछ नहीं मिला। जिसके कारण अपनी मांगों को लेकर ग्रामीण वर्ष 2020 से विश्वविद्यालय के आगे धरनारत्त है। इसी बीच सरकार ने गांव के विकास के लिए कई वायदे भी किए। जिनमें अधिकत्तर पूरे नहीं किए।

भिवानी। गांव प्रेमनगर में आयोजित मीटिंग में उपस्थित लोग।

विश्वविद्यालय की नौकरियों में आरक्षण की मांग

सरपंच राजेश कुमार ने बताया कि गांव की मुख्य मांगों में चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय की नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने, विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित गलत दीवार को हटाने, गांव के विकास के लिए मुख्यमंत्री की घोषणाओं को पूरा करने, विश्वविद्यालय की कार्यकारी समिति गांव के सदस्य को शामिल करने इत्यादि की है। जिन पर अभी तक विश्वविद्यालय प्रशासन और सरकार उदासीन रवैया अपनाए हुए है। उन्होंने बताया कि गांव की मांगों को पूरा करवाने के लिए सोमवार से धरना तेज किया जाएगा, जिसमें सभी ग्रामीण भाग लेंगे। इस अवसर पर धरना समिति के प्रधान कैप्टन कलम सिंह, सरपंच राजेश, पंच जोगेंद्र दुहन, नरेंद्र फौगाट, रमेश बूरा, छात्र नेता प्रवीण बूरा, जगपाल प्रधान, गोविंदा, अमित, ईश्वर आदि मौजूद रहे।

रणजी खिलाड़ी अमित वशिष्ठ की स्मृति में 32 युवाओं ने रक्तदान कर कमाया पुण्य

भिवानी। मैदान पर गेंदबाजी एवं बल्लेबाजी से विरोधियों के छक्के छुड़ाने वाले क्षेत्र के चहेते खिलाड़ी अमित वशिष्ठ भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी यादें आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का पुंज बनी हुई हैं। रविवार को अमित वशिष्ठ फाउंडेशन ने रिवाड़ीखेड़ा स्थित बाबा रामसिंह नाथ गोशाला के प्रांगण में स्वर्गीय अमित वशिष्ठ की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर में ग्रामीणों और युवाओं ने पहुंचकर अपने प्रिय खिलाड़ी को रक्तदान के जरिये श्रद्धांजलि अर्पित की। शिविर में रक्त एकत्रित करने एम्स बाढ़सा से विशेषज्ञ डॉ. नीतून और पैरामेडिकल स्टाफ की टीम विशेष रूप से पहुंची। इस दौरान 32 युवाओं ने रक्तदान किया, जिन्हें फाउंडेशन के पदाधिकारियों व अतिथि शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने बैज लगाकर सम्मानित किया। शिविर की अध्यक्षता राजकुमार शर्मा सरपंच ने की। फाउंडेशन ने रामसिंह गोशला को 5100 रुपये देने की घोषणा की। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने युवाओं को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अमित वशिष्ठ जैसे खिलाड़ी युवाओं के रोल मॉडल हैं।

मुर्राह नसल की भैंस पालने का हब बना गांव कुंगड़

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनाई पहचान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा खंड के अतंर्गत आने वाले गांव कुंगड़ के लोग सरकारी, गैर सरकारी नौकरियों, खेलों, उच्च पदों पर अपनी साख बना चुके हैं और वे पशुपालन में भी पीछे नहीं हैं। गांव कुंगड़ की मुर्राह नसल की भैंसो की चर्चे दूर-दराज तक हैं।

बताते हैं क वर्ष 1265 में राजस्थन के ढोसी गांव से यहां आकर चंदेरा गोयत ने कुंगड़ गांव को बसाया था। गांव के हट्टे-कट्टे जवान होने के चलते इस गांव का नाम कुंगड़ पड़ गया। हरियाणवी भाषा में हट्टे-कट्टे जवानों को कुंगर कहा जाता है। कुंगर से ही कुंगड़ शब्द का विकास हुआ है। चंदेरा गोयत पहले गांव से करीब 2 किलोमीटर दूरी पर स्थित खेतों में एक जगह पर आकर बसे थे लेकिन वहां पर पानी की व्यवस्था नहीं थी तो बाद में चंदेरा ने पानी की खोज की और उसे गांव कुंगड़ के स्थान पर एक कुंआ और जोहड़ मिला, इसके बाद वे खेतों को छोड़कर यहां पर आकर बस गए। गांव में कृषि योग्य भूमि का रकबा करीबन 2404 हैक्टेयर बताया जाता है और गांव की आबादी भी 18 हजार से उपर बताई जाती है। आबादी बढ़ने के चलते गांव में दो पंचायतों का गठन किया गया जिसमें बड़ा पाना व छोटा पाना नाम से पंचायत हैं। ऐतिहासिक है लाल कुंआ गांव में आधा दर्जन से अधिक कुंए हैं जिनमें लाल कुंआ, धोला कुंआ, फेरूवाला कुंआ, डेहरी कुंआ व अन्य कुंए स्थापित हैं। यह कुंआ गांव के बसने से पहले का है। कुंए भव्य आकृति गांव के सौंदर्य को चार चांद लगा रही है।

कटड़े और भैंस विश्वभर में प्रसिद्ध

गांव को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुर्राह नसल की भैंस पालने की पहचान मिली हुई है। गांव के हर घर में मुर्राह नसल की भैंस बंधी देखी जा सकती है। यहां के कटड़े व भैस विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। लाखों की कीमत की भैंस एवं कटड़े हर खूंटे पर बंधे देखे जा सकते हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं में यहां की भैंस हर बार बाजी मारती हैं और पशुपालकों को लाखों रूपयों का पुरस्कार हासिल हुआ है। पूरे देश से व्यापारी यहां पर भैंसे खरीदने के लिए आते हैं।

खेलों में भी आगे रहता है गांव

गांव खेलों में भी आगे है। पुराने वक्त में यहां की कबड्डी की टीम पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध रही है। कबड्डी के खिलाड़ी कमान सिंह गोयत, छाजूराम गोयत, रतिराम जांगड़ा, रोहताश, पप्पू, रामसिंह आदि सर्वश्रेष्ट खिलाड़ी रहे हैं। इसके अलावा लड़कियों ने खो-खो व कबड्डी में गांव का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। यहां पर योगा का भी काफी महत्व है। कई युवा विदोशों में जाकर योग शिक्षक की नौकरी कर रहे हैं। लड़कियां ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी खेलों में भी कई बार चैंपियनशिप रह चुकी हैं। कबड्डी में भी लड़किया काफी आगे हैं।

नए ठेकेदार ने सप्ताह का मांगा समय, इसके बाद उनकी मांग पूरी नहीं हुई तो उतरेंगे सड़कों पर

दस किलोमीटर के एरिया में टोल फ्री को लेकर सौंपी गांवों की सूची

विधायक को ज्ञापन देने के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

रविवार को बवानीखेड़ा व आसपास दस किलोमीटर के दायरे में रहने वाले लोगों का टोल फ्री करवाए जाने की मांग को लेकर टोल पर सामाजिक संगठन (हरियाणा जागृति मोर्चा व अन्य सामाजिक संगठन) तथा क्षेत्र के मौजिज लोगों की पंचायत हुई। पंचायत में टोल मैनेजर व नए ठेकेदार को बुलाया गया। जिस पर नए ठेकेदार ने सप्ताह का समय मांगा है। ताकि वह अधिकारियों से इस बारे में पूरी जानकारी लेने के बाद ही कोई राहत या रियायत दे पाएंगे।

दूसरी तरफ महापंचायत ने नए ठेकेदार को उन 20 गांवों की सूची सौंपी। जो कि 10 किलोमीटर के दायरे में आते है। बाद में महापंचायत में उपस्थित लोगों ने चेतावनी दी कि अगर एक सप्ताह के भीतर उनकी समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ तो वे सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे। महापंचायत में सबसे पहले विगत में हुई पंचायत में हुई बातचीत का ब्यौरा लिया गया। उस महापंचायत में कहा गया था कि 15 दिन में उनकी मांगों को पूरा कर दिया जाएगा,लेकिन इस दौरान उनकी मांग पूरी करने की बजाए ठेकेदार ही बदल गया। टोल पर तैनात कर्मचारियों ने बताया कि अब नए ठेकेदार ने जिम्मेदारी संभाल ली है।

उसके बाद नए ठेकेदार को बुलाया गया। नए ठेकेदार ने बताया कि उनको एक सप्ताह का वक्त दिया जाए। वे इस दौरान एनएचआई व आला अधिकारियों से बातचीत करेंगे और सारे नियम व जानकारी लेंगे। उसके बाद ही वे इस तरफ कोई कदम उठाएंगे।

बाद में पंचायत ने निणर्य लिया कि वे एक सप्ताह तक टोल मैनेजर की तरफ से मैसेज आने का इंतजार करेंगे। अगर कोई मैसेज नहीं आया तो वे फिर हलके के लोगों से सलाह करके सडकों पर उतरने को मजबूर होंगे।

जनप्रतिनिधि के रवैये पर जताई नाराजगी

टोल पर आयोजित महापंचायत में सभी लोगों ने जन प्रतिनिधि विधायक कपूर सिंह वाल्मिकी की चुप्पी पर नाराजगी जताई। लोगों ने बताया कि पिछले कई महीनों से बवानीखेड़ा व आसपास इलाके के वाहन चालकों को टोल के नाम पर खूब लूटा जा रहा है,लेकिन विधायक ने इस तरफ से चुप्पी साध ली है। विगत में सरपंचों द्वारा विधायक को इस बारे में ज्ञापन देने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की है। जिससे क्षेत्र के लोगों में जबरदस्त रोष व्याप्त है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर कामरेड ऑमप्रकाश ,हरियाणा जागृति मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू एडवोकेट ,राम किशन काजल , कामरेड राजेश कुगड़ हरफूल कदावला मास्टर हनुमान रोहिल्ला बनवारी नायक रामधारी यादव मनीष सचदेवा जयवीर अहलाण, जगदीश लाम्बा, जोगेंद्र जाखड़, राजेंद्र गौरी पूर्व पार्षद ,पूर्व पार्षद मीना चोपड़ा सिंधू,जितेंद्र गौरी आदि मौजूद रहे।

हरियाणा बैडमिंटन एसोसिएशन की वार्षिक बैठक में गुप्ता ने रखी जिले की उपलब्धियां

चरखी दादरी। हरियाणा बैडमिंटन एसोसिएशन की सालाना बैठक गुरुग्राम में हुई। जिसमें दादरी बैडमिंटन एसोसिएशन के महासचिव लोकेश गुप्ता ने शिरकत कर जिले में खेलों को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। बैठक में दादरी जिले की कार्यप्रणाली और खेल गतिविधियों की सराहना भी की गई। बैठक हरियाणा बैडमिंटन एसोसिएशन के प्रधान देवेंद्र सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस दौरान एसोसिएशन के महासचिव अजय सिंघानिया भी विशेष रूप से मौजूद रहे। प्रदेशभर से बैडमिंटन संगठनों के पदाधिकारी बैठक में प्रत्यक्ष और ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। लोकेश गुप्ता ने बताया कि दादरी जिला में युवाओं को खेलों से जोड़ने, खिलाड़ियों को बेहतर मंच देने तथा नियमित प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है। उन्होंने जिले में आयोजित कार्यक्रमों, प्रशिक्षण गतिविधियों और खिलाड़ियों की उपलब्धियों का भी ब्यौरा प्रस्तुत किया। प्रधान देवेंद्र सिंह ने सभी पदाधिकारियों से आह्वान किया कि हरियाणा में बैडमिंटन को हर गांव और युवाओं तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि जब तक हरियाणा के खिलाड़ी विश्व स्तर पर अपना दबदबा कायम नहीं कर लेते, तब तक सभी का लक्ष्य अधूरा रहेगा। बैठक के दौरान लोकेश गुप्ता ने आगामी जून माह तक दादरी में जिला स्तरीय बैडमिंटन स्पर्धा आयोजित कराने की योजना भी साझा की। वरिष्ठ पदाधिकारियों ने जिले में खेल गतिविधियों को और तेज गति से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए तथा हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। इस बैठक के बाद दादरी जिले के खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों में नया उत्साह देखने को मिल रहा है।

मोदी का मन की बात कार्यक्रम जनता से सीधा संवाद करता है : जगत कौशिक

तोशाम। रविवार को प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम को बापोड़ा मंडल के सभी बूथों पर भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी के साथ-साथ ग्रामीणों ने भी बड़े चाव से सुना। इस दौरान भाजपा के बापोड़ा मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मन की बात रेडियो कार्यक्रम एक राष्ट्रीय मंच है जो सामाजिक, सांस्कृतिक और नीतिगत मुद्दों पर जनता से सीधा संवाद करता है। इस अवसर पर सभी बूथों के बूथ अध्यक्ष और बूथ की कार्यकारिणी के सदस्य मौजूद रहे। इस अवसर पर राजू बापौडा, मुकेश शर्मा, गजानंद, मुनिपाल तंवर, सतबीर गौड़, प्रदीप तंवर, ललित कौशिक, सुरेन्द्र शर्मा, सूरजभान वर्मा, एडवोकेट राजेश जांगड़ा, मंडल उपाध्यक्ष कैप्टन जयवीर, चित्रपाल सिंह, किरनपाल सिंह, दिलीप शर्मा, सुमेर बीरन, सरपंच सुरेंद्र सिंह, कैलाश सरपंच, राजवीर सरपंच, पूर्व सरपंच राजकिशन, विनोद प्रजापति, राधेश्याम शर्मा, पवन धतरवाल, राजपाल लाम्बा, जय भगवान यादव, रविंद्र हेतामपुरा, राजेश खान आदि मौजूद रहे।

युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक सीखः हनुमान शर्मा

बहल। प्रधानमंत्री के मन की बात के 133वें एपिसोड को भाजपा नेताओं ने प्रेरणादायक व लोकल फिर वोकल को बढ़ावा देने वाला बताया है। नेताओं ने कहा कि पीएम ने लोगों को जनगणना का महत्व समझकर उसकी अहमियत बताई और उसमें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया। भाजपा नेता हनुमान शर्मा पाजू ने कहा कि प्रधानमंत्री ने महात्मा बुद्ध से लेकर नेताजी की जयंती का स्मरण कर लोगों में उनकी समाज और देश हित में योगदान को रेखांकित किया है, जो युवा पीढी के लिए प्रेरणादायक सीख है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, जल बचत, स्थानीय उत्पादों को अपनाने और जनभागीदारी जैसे विषयों पर प्रेरित कर आमजन को जीवनशैली सुधारने, आत्मनिर्भर बनने और समाजहित में योगदान देने का मार्ग दिखाया।

संघर्ष की सीख देता है भगवान परशुराम का जीवन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

ब्राह्मण सभा उन्नीस गांव द्वारा रविवार को दादरी शहर की रासीवासिया धर्मशाला में भगवान परशुराम जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर बादली हलके से विधायक कुलदीप वत्स ने कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। सभा प्रधान बिजेंद्र शर्मा ढाणी के नेतृत्व में अन्य सभी पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथि का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

विधायक ने कहा कि वे समाज की पगड़ी की इज्जत को बरकरार रखेंगे। इसके लिए चाहे कोई भी कुर्बानी देनी पड़े वे पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने भगवान परशुराम की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित किया और आमजन से उनके दिखाए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। विधायक कुलदीप वत्स ने कहा कि कुछ लोगों में भगवान परशुराम के बारे में गलत अवधारण है। लेकिन सच्चाई ये है कि भगवान परशुराम ने 21 बार अधर्मी, अत्याचारी राजाओं, असुरों का पृथ्वी से संहार कर धर्म की स्थापना की। विधायक ने कहा कि समाज की युवा पीढ़ी को अच्छी शिक्षा और संस्कारित जीवन के लिए प्रेरित करना ही भगवान परशुराम जन्मोत्सव मनाने के अर्थ को सार्थक करता है। जरूरतमंदों की मदद करना और अपने पराये की पहचान कर अपनी जनमत शक्ति का उपयोग करना समाज हित में होता है। उन्होंने कहा कि नेता चाहे किसी भी पार्टी या समाज से हो उसे हर जरूरतमंद की मदद करनी चाहिए। उन्होंने इस मौके पर मौजूद लोगों को पांच मई को उनके आवास पर श्री बालाजी की सवामणी कार्यक्रम में पहुंचने का न्योता भी दिया।

चरखी दादरी । कार्यक्रम में विधायक कुलदीप वत्स को स्मृति चिन्ह प्रदान करते आयोजक।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में ब्राह्मण सभा उन्नीस गांव के सचिव सुशील शर्मा गोठड़ा, उप प्रधान पप्पू मोड़ी, उप प्रधान मदन, प्रेस प्रवक्ता विजय समसपुर, खजांची मनोज रावलधी, धनपत रावलधी, देवेंद्र मकड़ाना, छाजूराम महराणा, सरपंच श्रीनिवास संतोखपुरा, महावीर मकड़ानी, पूर्व प्रधान महेंद्र शर्मा समसपुर, श्यामसुंदर खातीवास, जगदीश पटवारी बलकरा का विशेष सहयोग रहा।

माडल दादरी जिला बनाओ संगठन ने चिकित्सा शिविर व रोजगार मेला

माडल दादरी । जिला बनाओ संगठन द्वारा भगवान परशुराम जन्मोत्सव उपलक्ष्य मे आयोजित किए जा रहे साप्ताहिक कार्यक्रमों का समापन आज गांव रानीला, जीतपुरा, कन्हेटी, मोरवाला आदि में लगाए गए रक्तदान कैंप, सम्मान समारोह, रोजगार मेले के जरिए किया। पिछले 20 अप्रैल को इस सामाजिक कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था। संगठन के युवा विंग अध्यक्ष अधिवक्ता डॉ अनिल बलवान साहू ने बताया कि साप्ताहिक कार्यक्रमों के तहत विभिन्न गांवों में 21 मेडिकल कैंप, 3 रक्तदान शिविर लगाए गए, सामांतर रूप से अंतिम दिन रोजगार मेला व सम्मान समारोह हुआ। अभी तक सामाजिक मुहिम में संगठन 4112 कैंप लगा चुका है। आगामी अगस्त तक 4600 कैंपों का लक्ष्य संगठन द्वारा धारण किया गया है। अनिल साहू ने बताया कि मेडिकल कैंपों के जरिए 1900 के करीब लोगों ने लाभ लिया। 169 को आंखों के ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया। 380 लोगों को नजर के चश्में वितरित किए गए। तीन रक्तदान कैम्पों में 98 यूनिट ब्लड एकत्रित कर बैंकों को सौंपा गया। अंतिम दिन सम्मान समरोह के दौरान भगवान परशुराम को समर्पित स्मृति चिहन के जरिए 27 उन युवाओं को जो कि समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है उन्हें सम्मानित किया गया। अनिल ने बताया कि अब दादरी नगर में सामाजिक मुहिम चलेगी जिसमें सीसीआई सीमेंट फैक्ट्री के सैकडों एकड जमीन के सदुपयोग की मांग प्रमुखता से उठाई जाएगी।

सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम मन की बात कार्यक्रमः वीरेंद्र कौशिक

भिवानी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात को लेकर भिवानी जिले में एक अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला है। भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक के नेतृत्व और रणनीतिक प्रबंधन के चलते भिवानी जिला इस कार्यक्रम को सुनने और आयोजित करने के मामले में पूरे हरियाणा प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा है। इस उपलब्धि ने ना केवल जिले के कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया है, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी के प्रति जनता की गहरी दीवानगी को भी एक बार फिर साबित कर दिया है। इस दौरान भिवानी जिले के अंतर्गत बड़सी मंडल ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। रविवार को आयोजित मन की बात कार्यक्रम के लिए जिले भर में बूथ स्तर पर विशेष तैयारियां की गई थीं। जनभागीदारी के मामले में भिवानी ने प्रदेश के अन्य सभी जिलों को पीछे छोड़ दिया।

सांसद धर्मबीर सिंह ने तोशाम में कार्यकर्ताओं के साथ सुना पीएम का मन की बात कार्यक्रम

तोशाम। सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 133वें एपिसोड में आत्मनिर्भर भारत और कलपक्कम रिएक्टर की सफलता का जिक्र किया है। भिवानी महेंद्रगढ लोक सभा क्षेत्र के सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह रविवार को तोशाम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात' के 133वें एपिसोड को वर्चुअल लोगों के साथ बैठ कर सुन रहे थे। उन्होंने कहा कि 133 वें एपिसोड के माध्यम से प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को आत्मनिर्भरता और तकनीकी नवाचार के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

खुले दरबार में विधायक ने सुनीं समस्याएं

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान ने रविवार को अपने कैंप कार्यालय में खुला दरबार लगाकर आमजन की समस्याएं सुनीं। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग अपनी शिकायतें और मांगें लेकर पहुंचे। विधायक ने फरियादियों की समस्याएं सुनीं और संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जा सके। विधायक ने अधिकारियों को कहा कि जनता की समस्याओं के समाधान में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और प्राथमिकता के आधार पर कार्य किया जाए।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

डुअल ओटीपी सिस्टम से नागरिकों को मिलेगी सुरक्षा, दहशत व ब्लैकमेलिंग से होगा बचाव

अभेद्य एपः बुजुर्ग खाताधारकों के लिए बहुत उपयोगी

- एप से एक्सटॉर्शन कॉल्स व धमकियों से बचाव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

डिजिटल धोखाधड़ी, डिजिटल अरेस्ट व एक्सटॉर्शन कॉल्स (रंगदारी के लिए फोन) जैसे अपराधों से आम जनता और वरिष्ठ नागरिकों को सुरक्षित रखने के लिए पुलिस की ओर से दो अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीकी कदम उठाए गए हैं। नागरिकों को जागरूक और सुरक्षित करने के उद्देश्य से यह सूचना जारी की जा रही है। यह एक आधुनिक मोबाइल आधारित सुरक्षा प्लेटफॉर्म है, जिसे अपराधियों की ओर से किए जाने वाले मानसिक उत्पीड़न और धमकियों को रोकने के लिए तैयार किया गया है।

ऑटोमैटिक ब्लॉकिंगः यह ऐप अंतरराष्ट्रीय, वर्चुअल या मास्क किए गए अनजान नंबरों से आने वाली संदिग्ध कॉल्स और व्हाट्सएप संदेशों को आप तक पहुंचने से पहले ही ब्लॉक कर देता है। जिससे अपराधियों की ओर से फैलाई जाने वाली दहशत और ब्लैकमेलिंग से बचाव होता है। भले ही कॉल आपके पास न पहुंचे, लेकिन बैकएंड पर पुलिस इन नंबरों का डेटा सुरक्षित रखती है, ताकि अपराधियों को ट्रैक करके उन पर सख्त कार्रवाई की जा सके।

डुअल ओटीपी सिस्टमः डिजिटल अरेस्ट से बचाव

जालसाज वीडियो कॉल पर फर्जी पुलिस या जांच अधिकारी बनकर लोगों को डराते हैं और उन्हें अकेले में पैसे ट्रांसफर करने पर मजबूर करते हैं। जिसे डिजिटल अरेस्ट कहा जाता है। वरिष्ठ नागरिकों को इस धोखे से बचाने के लिए एचडीएफसी बैंक के सहयोग से डुअल ओटीपी सिस्टम शुरू किया गया है। इसके लिए अन्य बैंकों के साथ भी मीटिंग की गई है। यह प्रणाली विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के खाताधारकों के लिए तैयार की गई है।

कैसे करता है कामः बड़े फंड ट्रांसफर के दौरान, लेन देन का ओटीपी केवल खाताधारक को ही नहीं, बल्कि उसकी ओर से चुने गए एक भरोसेमंद परिवार के सदस्य के मोबाइल नंबर पर भी भेजा जाएगा। खाते से पैसा तभी ट्रांसफर होगा, जब दोनों ओटीपी खाताधारक और परिजन का दर्ज किए जाएंगे। इससे परिवार के सदस्य अलर्ट हो जाते हैं और डर या जल्दबाजी में होने वाली आर्थिक ठगी तुरंत रुक जाती है।

आम जनता से अपील

- धमकी भरे अनजान कॉल्स और संदेशों से बचने के लिए अभेद्य ऐप का उपयोग करें।
- घर के बुजुर्गों 60 आयु के बैंक खातों में डुअल ओटीपी सुविधा सक्रिय कराएं और किसी विश्वसनीय परिजन का नंबर रजिस्टर करें।
- याद रखें, कोई भी सरकारी एजेंसी कभी भी वीडियो कॉल के माध्यम से किसी को अरेस्ट नहीं करती है।